BA-3, Paper-7.
Topic - Political Culture
Date - 30.07.2020
Seema Kumari, Asst. Prof. (Pol. Sc.), RMC, VKSU

नागरिक संस्कृति के दो मुख्य तत्व माने जाते हैं जो एक दूसरे को सहारा देते हैं।

क) कानून का शासन

ख) कानून के प्रति सम्मान

रा० संस्कृति के अनुभवमूलक अध्ययन की परंपरा में एस. इ. फाइनर ने यह पता लगाने का प्रयत्न किया कि तीसरी दुनिया के कुछ नवोदित देश में किन कारणों से संवैधानिक शासन प्रणाली स्थिर नहीं रह पाती और इनकी जगह सैन्य शासन स्थापित हो जाती है। अपनी कृति 'Man on the Horse' (1962) के अंतर्गत फाइनर इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि संवैधानिक प्रणाली की स्थिरता दो बातों पर निर्भर करती है:-

1. वैधता - अर्थात राज० शक्ति के उपार्जन और स्थानांतरण की प्रक्रियाओं के मध्य मतैक्य रहना चाहिए।

2. सहभागिता - समाज के सदस्य अपने अपने हितों औचित्य और विचारों के आधार पर तरह-तरह के सहचर्यों के रूप में सक्रिय हों।

राजनीतिक संस्कृति के वैकल्पिक सिद्धांत

→ रा० सं० का उदारवादी सिद्धांत - पश्चिमी जगत का रा० सं० का वर्णन।

आमंड, सिडनी वर्बा, ने ब्रिटीश रा० सं० का वर्णन। सिडनी वर्बा एवं आमंड (the civic culture revisited 1980, में सिडनी वर्बा एवं आमंड ने अपने पुराने अध्ययन की आलोचना, आत्मालोचना और पुनर्मूल्यांकन प्रस्तुत किया है जिसमें उन्होंने कहा कि USA, ब्रिटेन में सरकार के प्रति विश्वास में कमी आई है। रा० सं० की संकल्पना पर विचार और पुनर्विचार चलता रहा है। माइकल रियान ने अपनी चर्चित कृति 'Politics and Culture : Working Hypothesis for a Post revolutionary Society (1989) में यह तर्क दिया कि नागरिक संस्कृति पूंजीवाद के उदय के साथ उभरकर सामने आई थी। परंतु समकालीन समृद्ध समाज उत्तर भौतिक वादी मूल्यों को बढ़ावा देना चाहता है। इस दृष्टिकोण

Scanned with CamScanner

के अनुसार पूंजी संचय सामाजिक उन्नति के लिए जरूरी शर्त नहीं है।

रा० संस्कृति का आमूलपरिवर्तनवादी सिद्धांत :-

यह सिद्धांत मार्क्सवादी चिंतन की देन है। मार्क्सवादी अपने राजनीति विश्लेषण के अंतर्गत 'राजनीतिक संस्कृति' शब्द का उपयोग नहीं करते बल्कि वे विचारधारा और प्राधान्य जैसे शब्दों का प्रयोग का करते हैं। विचारधारा - उन युक्तियों और मान्यताओं को समुच्चय जिनके आधार पर प्रभुत्वशाली वर्ग अपने शासन को लोगों की दृष्टि में उचित ठहराने का प्रयत्न करते हैं।

प्राधान्य (Hegemony) - वह स्थिति जिसमें शासक वर्ग अपने हित से जुड़े मूल्यों और मान्यताओं को शिक्षा, संस्कार या प्रचार के माध्यम से संपूर्ण समाज के लिए अति उपयुक्त या आदर्श मूल्यों और मान्यताओं के रूप में स्थापित कर देता है ताकि उसका शासन लोगों की सहमति पर आधारित प्रतीत हो। यह संकल्पना इटालियन मार्क्सवादी एंटोनियो ग्राम्शी (1891-1937) की देन है।

उदारवादियों के अनुसार रा० संस्कृति राजनीतिक समाजीकरण के माध्यम से अर्जित की जाती है जिसका मुख्य उपकरण परिवार है, विद्यालय, समकक्ष समूह (peer group), धार्मिक संगठन, जनसंपर्क के साधन, हित समूह भी अपनी अपनी भूमिका निभाते हैं।

मार्क्सवादियों की दृष्टि में यह प्रभुत्वशाली वर्गों की उस कार्रवाई का परिणाम है जिसके अंतर्गत वे धर्म, शिक्षा प्रणाली, जनसंपर्क के साधनों, इत्यादि के माध्यम से अपने मूल्यों और मान्यताओं के प्रति पराधीन वर्गों के मन में आस्था जगाने का प्रयत्न करते हैं। नागरिक समाज की संस्थाएं (परिवार, धार्मिक संगठन और स्कूल) पूंजीवादी प्रणाली के लिए वैधतास्थापन की संरचनाएं जुटाती हैं।

Scanned with CamScanner